नवरात्रि का त्योहार और अर्थ-बोध

चिरातीत से भारत के लोग आश्विन मास की शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी तक नवरात्रि का त्योहार भक्ति-भावना और उत्साह से मनाते चले आते हैं। इस त्योहार के प्रारम्भ में ही लोग 'कलश' की स्थापना करते हैं और अखण्ड दीप जगाते हैं जो लगातार नव दिन और रात जगता रहता है। वे इन दिनों कन्या-पूजन करते, नियम पालन करते, जागरण तथा व्रत-उपवास करते, तथा दुर्गा, काली, सरस्वती आदि का पूजन करते हैं।

प्रश्न उठता है कि 'आदि शक्ति' का क्या स्वरुप है, सरस्वती, दुर्गा आदि का क्या वास्तविक परिचय है और अतीत काल में कन्याओं ने क्या महान कार्य किया था जिस की स्मृति में आज तक नवरात्रि में उनका पूजन होता है?

नवरात्रि से सम्बन्धित तीन प्रसंग

इस विषय में जानकारी के लिए नवरात्रि से सम्बन्धित तीन मुख्य प्रसंग, जिनको कथा रुप में भक्त-जन सविस्तार सुना करते हैं, सहायक सिद्ध हो सकते हैं। उनमें से एक आख्यान में तो यह कहा गया है कि पिछली चतुर्युगी के अन्तिम चरण में जब विश्व विनाश निकट था, तब मधु और कैटभ नामक असुरों ने देवी-देवताओं को अपना बन्दी बनाया हुआ था और तब श्री नारायण भी मोह निद्रा में सोये हुए थे। तब ब्रह्मा जी के द्वारा आदि कन्या प्रगट हुई। उसने नारायण को जगाया और उन्होंने मधु तथा कैटभ का नाश कर देवी-देवताओं को मुक्त कराया। दूसरे आख्यान में कहा गया है कि 'महिषासुर' नामक असुर ने स्वर्ग के सभी देवी-देवताओं को पराजित किया हुआ था। त्रिदेव की शक्ति से एक कन्या के रुप जो 'आदि शक्ति' प्रगट हुई, वह दिव्य अस्त्रों-शस्त्रों से सुसज्जित थी, त्रिनेत्री थी और अष्ट भुजाओं वाली थी। उसने महिषासुर का वध किया और देवी-देवताओं को मुक्त कराया। तीसरे प्रसंग में कहा गया है कि सूर्य के वंश में शुम्भ और अशुम्भ नामक दो असुर पैदा हुए। उनके प्रधान कार्यकर्ता का नाम रक्तबिन्दु था, सेनापति का नाम धूम्रलोचन था और उसके दो मुख्य सहायकों का नाम चण्ड और मुण्ड था। शिव जी की शक्ति से 'आदि कुमारी' प्रगट हुई और उस के विकराल रुप से काली प्रगट हुई। उसने चण्ड-मुण्ड का विनाश किया और फिर कालिका ने अपनी योगिनी शक्ति द्वारा धूम्रलोचन और रक्त बिन्दु का भी विनाश किया। आख्यान में बताया गया है कि रक्त बिन्दु की यह विशेषता थी कि यदि उसके रक्त का एक भी बिन्दु गिर जाता तो उस बीज से एक और असुर पैदा हो जाता था। आदि शक्ति ने रक्त बिन्दु का इस तरह विनाश किया कि उसका एक भी बिन्दु अथवा बीज नहीं रहा।

शब्दार्थ या भावार्थ

अब देखा जाए तो वास्तव में तो इन आख्यानों में रुपक अलंकार के द्वारा विश्व के एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण वृत्तान्त का वर्णन किया गया है। परन्तु लोग प्रायः इसका शब्दार्थ ही ले लेते हैं जिससे वे सत्य-बोध से वंचित रह जाते हैं। वास्तव में किसी एक या किन्हीं दो असुरों द्वारा सभी देवी-देवताओं के परास्त होने की बात शब्दार्थ में तो किसी के गले के नीचे उतरना भी मुश्किल है। हाँ, भावार्थ में यह वृत्तान्त बहुत महत्त्वपूर्ण है। वास्तव में 'मधु' और 'कैटभ' 'मीठे' और 'विकराल' अर्थ के वाचक होने से 'राग' और 'द्वेष' के प्रतीक हैं और 'असुर' शब्द 'आसुरी लक्षणों' या 'मनोविकारों' का बोधक है। 'काम', 'मोह' और 'लोभ' – 'मधु' नामक 'असुर' हैं और 'क्रोध' तथा 'अहंकार', 'कैटभ' हैं। इसी प्रकार 'महिष' शब्द का अर्थ 'भैंस' है। भैंस 'मन्द बुद्धि', 'अविवेक' तथा तमोगुण का प्रतीक है।

अभी तो एक प्रश्नोक्ति भी है – "अक्ल बड़ी कि भैंस?" 'धूम्रलोचन' का अर्थ है धुएँ वाली आँखें। अतः यह ईर्ष्या और बुरी दृष्टि का वाचक है। शुम्भ और निशुम्भ हिंसा और द्वेष आदि के वाचक हैं।

> **नवरात्रि**
> में जो शक्तियों की पूजा होती है, उसका भी कुछ अर्थ है। नवरात्रि में लक्ष्मी, दुर्गा तथा सरस्वती की पूजा होती है। लक्ष्मी से धन माँगते हैं, सरस्वती विद्या की देवी है तो उससे बुद्धि का वरदान माँगते हैं और दुर्गा से शक्ति माँगते हैं। रावण पर विजय पाने के लिये शक्ति की आवश्यकता है। यह शक्ति भी आन्तरिक चाहिए, क्योंकि विकार भी तो आन्तरिक दुर्बलता से ही उत्पन्न होते हैं। अब यह दुर्गा इत्यादि देवियाँ जिनका कीर्तन करते समय लोग उनसे शक्ति तथा वृद्धि बल माँगते हैं, वे कौन थीं? वास्तव में ये देवियाँ शिव की सन्तान थीं जो 'शिव शक्तियाँ' अथवा 'ब्रह्मा पुत्रियाँ' कहलाती थीं।

वास्तविक भाव

अतः तीनों आख्यानों का वास्तविक भाव यह है कि पिछली चतुर्युगी के अन्त में जब विनाश काल निकट था और सृष्टि पर अज्ञान तथा तमोगुण रुप रात्रि छाई हुई थी तब राग(मधु) और द्वेष(कैटभ) ने (शुम्भ और निशुम्भ) उन सभी नर-नारियों को जो कि सतयुग में दिव्यता सम्पन्न होने से देवी-देवता थे परन्तु धीरे-धीरे अपवित्रता की ओर अग्रसर होते आये थे, अपना बन्दी बना रखा था। यहाँ तक कि सतयुग के आरम्भ में जो देव-शिरोमणी 'श्री नारायण' थे, अब वे भी जन्म-जन्मान्तर के बाद मोह-निद्रा में विलीन थे। ऐसी धर्म-ग्लानी के समय परमपिता शिव ने त्रिदेव के द्वारा भारत की कन्याओं को ज्ञान, योग तथा दिव्य गुण रुपी शक्ति से सुसज्जित किया। यह ज्ञान ही उनका तीसरा नेत्र था और अन्तर्मुखता, सहनशीलता आदि दिव्य शक्तियाँ ही उनकी अष्ट भुजायें थीं। इन्हीं शक्तियों के कारण वे 'आदि शक्ति' अथवा 'शिव शक्ति' कहलायीं। इन आदि कुमारियों अथवा शक्तियों ने भारत के नर-नारियों को जो कि सतयुग में देवी-देवता थे, जगाया और उन्हें उत्साहित करके आसुरी प्रवृत्तियों का नाश किया - ऐसा कि उनका बीज, अंश या बिन्दु भी नहीं रहने दिया कि जिससे संसार में फिर आसुरीयता पनप सके। उन द्वारा ज्ञान दिये जाने की यादगार के रुप में आज नवरात्रियों के प्रारम्भ में 'कलश' की स्थापना की जाती है। उन द्वारा जगाये जाने की स्मृति में आज भक्तजन जागरण करते हैं तथा योग द्वारा आत्मिक प्रकाश किये जाने के कारण ही वे अखण्ड दीप जगाते हैं। उन कन्याओं के महान कर्त्तव्य के कारण ही वे हर वर्ष इन दिनों कन्या-पूजन करते हैं और सरस्वती, दुर्गा आदि से प्रार्थना करते हैं कि – "हे अम्बे, हे माँ, मेरी ज्योति जगा दो और मुझे ऐसी शक्ति प्रदान करो कि मेरे अन्तर का अन्धकार मिट जाये।"

आत्मा का दीपक जगाओ

परन्तु जन-जन को यह मालूम नहीं है कि अब पुनः कलियुग के अन्त का समय चल रहा है और पुनः आसुरीयता तथा भ्रष्टाचार का बोलबाला है तब परमपिता शिव पुनः कन्याओं को ज्ञान शक्ति देकर पुनः जन-जन को आत्मिक ज्योति जगा रहे हैं और आसुरीयता के अन्त का कार्य करा रहे हैं और इसलिए हम सभी का कर्त्तव्य है कि हम केवल जयघोष या कर्म काण्ड में ही न लगे रहें बल्कि अपने मन में बैठे महिषासुर, मधु-कैटभ, रक्त बिन्दु या धूम्रलोचन का नाश कर दें। वास्तव में ज्ञान द्वारा आत्म-ज्योति जगाना ही सच्चा दीप जगाकर सही रुप में नवरात्रि मनाना है। यही नारायण द्वारा मोह-निद्रा को छोड़ना तथा मधु-कैटभ को मारना या (आध्यात्मिक) शक्ति द्वारा महिषासुर किंवा धूम्रलोचन और रक्त बीज आदि का संहार करना है।

नई दिल्ली-हरिनगर। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान एवं 'शिव जयंती महोत्सव' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. संजीव पतजोशी,आई.पी.एस.,ज्वाइंट सेक्रेट्री,मिनिस्ट्री ऑफ पंचायती राज,भारत सरकार, श्याम शर्मा,पूर्व मेयर,एमसीडी, शिव सिंह,कमांडर,नेवी, ब्र.कु. सुशांत,नेशनल कोऑर्डिनेटर,मीडिया विंग, ब्रह्माकुमारीज़, राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी,डायरेक्टर,ओ.आर.सी.,हरिनगर,ब्रह्माकुमारीज़ तथा अन्य।

बरनाला-पंजाब। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी धीरज दद्दाहूर, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ब्रिज बहन, ब्र.कु. सुदर्शन, ब्र.कु. पुष्प तथा अन्य गणमान्य लोग।

नई दिल्ली-ओम विहार। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण करते हुए काउंसलर श्रीमति आभा चौहान, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विमला बहन, मंडल महामंत्री राजेश जी, उत्तम नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लीला बहन, ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. सुशांत भाई, नांगली विहार सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. हेमा बहन, आर.जे. रमेश,रेडियो मधुबन,शांतिवन तथा अन्य।

जयपुर-राजापार्क(राज.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत महाशिवरात्रि महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. पूनम दीदी,उपक्षेत्रीय संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़, सीताराम अग्रवाल, कोषाध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी, रविंद्र उपाध्याय,बॉलीवुड सिंगर, रवि नैयर, अध्यक्ष, राजापार्क व्यापार मंडल एवं प्रमुख समाजसेवी, नीरज अग्रवाल,पार्षद तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

हल्द्वानी-रामपुर रोड(उत्तराखंड)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र एवं ब्रह्माकुमारीज़ पाठशालाओं द्वारा शिव जयंती के अवसर पर भिन्न-भिन्न स्थानों से निकाली गई शोभायात्रा। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में नैनीताल हाईकोर्ट के वकील रामसिंह सम्मल, अरविन्द जोशी,एडिशनल डिस्ट्रिक्ट को-ऑपरेटिव ऑफिसर,को-ऑपरेटिव बैंक,उत्तराखंड, रीता दुर्गापाल,समाज सेविका, ब्र.कु. कर्नल सती, ब्र.कु. नीलम बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. वीना बहन,नैनीताल तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

कमालगंज-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में एस.एच.ओ. अमर पाल सिंह, रामाश्रम संचालक बाबू सिंह, उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उषा बहन तथा ब्र.कु. सुमन बहन।